Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XII/Jan; 12pp.1-4

ISSN:-2230-7850

Research Papers

" अल्मा कबूतरी उपन्यास में अभिव्यक्त आदिवासी जनचेतना"

प्रा . एल . टी . काळे
हिंदी विभागाध्यक्ष
राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड
जिला - नांदेड (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :–

मानव समुदाय के दुर्लक्षित दुरूर एवं लंबे आरसे से अविकसित आदिवासी समाज का चित्र अत्यंत विदारक तथा दर्दनाक है, जंगलों में निवास करता भटकता यह समाज आज भी विकास एवं सुसंस्कृत समाज से कौसों दूर है, जो हमेशा गॅवार, जगली तथा वनवासी समझा गया हैं, एक तरफ भूमंडलिकरण, मीडिया, कम्प्युटर, इंटरनेट आदि से आज विश्व लघुतम बनता जा रहा है, और दुसरी तरफ सदियों से जंगली अवस्था में रहनेवाला यह समाज आज भी विकास से अच्छुता है, आज उनके जीवन में बदलाव की आवश्यकता है, जाहिर है कि इन्हे भी इस बदलाव की प्रकिया में सहयोग देकर तथा शिक्षा पाकर अपर्नेआप को बदलाव की मानसिकता में ढालकर मुख्य धारा में स्थान पाने की कोशीश करनी होगी, तभी आदिवासी जन समुदाय का विकसित रूप आनेवाले कल में देखा जा सकता है,

साहित्य समाज का दर्पण है, के अनुरूप हिन्दी साहित्य में आदिवासी जनसमुदाय की विभिन्न समस्याओं को उकरने का काम प्रबुध्द रचनाकार कर रहे है, 'संजीव' के 'धार' ह्य1990ह 'पॉव तले की दुब' जंगल जहॉं शुरू होता है" ह्य2000ह आदि उपन्यासों में आदिवासी जर्नजीवन पर मंथन हुआ है, जिसमें कोयलांचलके जीवन का कटु और नग्न यथार्थ प्रस्तुत हुआ है, साथ ही रांगेय राघव के 'कब तक पुकारूँ' राजेंद्र अवस्थी के 'सुरज किरण की छॉव' शानी के 'सॉप ऑर सीढी' वीरेंद्र जैन के 'पार' आदि उपन्यासों में भी आदिवासी जर्नजीवन का चित्रण हुआ है, इनके सार्थसाथ महिला लेखिकाओं मे एक महत्वपूर्ण नाम 'मैत्रेयी पुष्पा' जी का है, जिन्होने अल्मा कबूतरी उपन्यास ह्य2000ह लिखकर आदिवासी जनजातियों के जीवन का वास्तविक चित्रण पाठकों के समक्ष रखा है, जन्म से आदिवासी और उसमें भी स्त्री की स्थिति क्या होगी उसका जीवंत चित्र यह उपन्यास है, नारी मन की संवेदना को जानकर मैत्रेयी जी ने आदिवासी महिलाओं के रार्जमर्रा की जिंदगी में कितनी विचित्रता एवं नग्नता है इसका जीता जागता चित्र उपस्थितकिया है,

उपन्यास का कथ्य ः

उपन्यास में झॉसी के आर्सपास की (बुंदेलखण्ड) पहाडियों में निवास कर्ती भटकती कबूतरा नामक जनजाति की यातनाओं को मुकरित किया है, साथ ही उनकी जीवन पध्दती, संस्कृति एवं रोर्जमर्रा की जीवनगत गतिविधियों का भी समावेश है, दर्रदर भटकती इस जनजाति की जीविकोपार्जन का एकमात्र साधन चोरी करना है, उपन्यास में दो समाजों का चित्रण हुआ है, एक आदिवासी समाज है दुसरा सभ्य समाज है, कबूतरा समाज पर सभ्य समाज हमेशा अपना वर्चस्व बनाए रखता है, सभ्य और शिक्षित समाज का यह अमानवीय रूप जो कबूतरा जनजाति को अपने शिंकने में दबाये में दबाये रखना चाहता है, इसका हुर्बहु चित्र यह उपन्यास है,

कबूतारा समाज के प्रतिनिधी पात्र है कदमबाई, अल्मा, भूरी, राणा, रामसिंह, सरमन आदि तथा सभ्य समाज के प्रतिनिधि पात्र हैंमंसाराम, जोधा, केहर, धीरज, सूरजभान, श्रीराम शास्त्र आदि, कबूतरा जनजाति और सभ्य समाज का आपसी टकराव कदमबाई और मंसाराम से परिलक्षित होता है, टकराव के बाद हमेशा कबूतरा की ही हार होती है, कदमबाई एक निर्भीड औरत है, जो अपने पति के मृत्यु के बाद मंसाराम द्वारा किये गये अत्याचार का प्रतिशोध लेने के लिए समाज से संघर्ष करती रहती है,

उस संघर्ष का शस्त्र उसका बेटा राणा है, परंतु राणा में कज्जा लोगों जैसे ही लक्षण विराजमान है, जो चोरी, लुट, शराब आदि से इन्कार करता है, आदिवसियों के गुण उसमें न देख कदमबाई निराश होती है, सभ्य समाज की अशुद्ध वासना का वह शिकार हुई होती है, पुलिस द्वारा किये जानेवाले अत्याचार, प्रशासन का शोषण आदि से उसमें घृणा, रोष, प्रतिशोध आदि की भावना भडकती रहती है,

कदमबाई जैसे ही भूरी, राम सिंह और अल्मा की भी कहानी इसी टकराहट की कहानी है, सभ्य समाज के शोषण का यह सब शिकार होते है, भूरी अपना शरीर बेचकर अपने बेटे को पढाती है, परंतु शिक्षा प्राप्ति के बाद बी राम सिंह को कभी सभ्य समाज स्वीकार नही करता, बल्कि पुलिस उसे अपना दलाल बनाकर उसकी मजबुरियों का फायदा उठाती है, इतना ही नही तो अम्त में उसे

डाकू बेटा सिंह के नाम पर मार दिया जाता है, कदमाबाई और मंसाराम के अनैतिक संबंधों को समाज स्वीकार नही करता, अंत में संसाराम शराब का ठेका लेता है, और खुले आम कदमबाई के साथ रहता है,

अल्मा आततायियों को साहस के साथ झेलती है, उसके साथ धोका होता है, दुर्जन अल्मा को बेच देता है, सूरजभान उसे चुनावी समय में नेताओं के आगे परोसने के लिए खरिदता है, तब अल्मा की देखभाल करणेवाला धीरज उसे सूरजभान के चंगुल से छुडाता है, उसके बाद भी अल्मा श्रीराम शास्त्री के ह्यमंत्रीह यहॉ फॅस जाती है, श्रीराम शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु के बाद उसकी जगह अल्मा को उम्मीदवार के रूप में रखा जाता है, यहॉ उपन्यास का कथानक समाप्त होता है

इस तरह उपन्यास का कथानक आदिवासी कबूतरा जनजाति की यातनाओं का सटिक वर्णन करता है, यहॉ तक की पुलिस व्यवस्था का व्यवहार भी इन स्त्रियों कें प्रति शर्मनाक होता है, उनकी गरीबी और विवशता का फायदा उठाकर शारीरिक शोषण किया जाता है, पुलिस का छापा इन महिलों के लिए काफी दर्दनाक सावित होता है, यहॉ तक कि इन औरतों पर अपना तन छुपाने के लिए कपडे तक नही होते है, वह तार्रतार हा चुके होते है इतनी विवश यह महिलायें मात्र सिसकने के अलावा कुछ भी नही कर सकती, ये औरते ऐसे जनजाति में पैदा हुई है कि इन्हे सभ्य समाज की बर्बरता हैवानियत जार्रजार होकर भी सहनी पडती है यह है इनकी किस्मत की फूटी तस्वीर,

निष्कर्ष ः

इस प्रकार अपने आप में यह महिलायें असुरक्षित है, इनके जीवन में स्थिरता का अभाव सदैव बना रहता है, अनंत समस्याओं से घिरा इन आदिवासीयों का जीवन अक्सर खतरों से खाली नही रहता, उपन्यास का पूरा कथानक आदिवासी जनजाति के लोगों पर होनेवाले अन्याय़ अत्याचार तथा आदिवासी स्त्रियों को अपनी हवस का शिकार बनाती पुरूषी मानसिकता को उजागर कहता है, साथ ही आदिवासी लोगों की निहायत मानसिकता को भी प्रकट करता है, जहॉ चोरी़ डकैती़ छिना झपटी़ लूर्टपाट जैसी उनकी जीवन वृत्ती को भी बेनकाब करता है, जो आदिवासी जनजीवन को नजदिकसे जानर्नेसमझने का एक सच्चा पथ प्रदर्शक सिध्द हुआ है, प्राचीन काल से निम्न व जनजातिय महिलाओं को भोग की वस्तु मानकर सभ्य समाज हमेशा उनपर अत्याचार करता आया है, सभ्य समाज ही इस स्थिति का निर्भाता है, जिनके खेतों में यह कबूतरा बस्ती बसती है वे लोग कबूतरा औरतों को अपना शिकार समझकर अपनी हवस का शिकारी बनाते है, प्राकृतिक रूप से यह दुर्बल महिला उनका सामना करने में असमर्थ होकर हार जाती है, और उनके भोग की वस्तु बन जाती है, इस यथार्थ नग्नता को पूरे उपन्यास में उकेरा गया है, यही इस उपन्यास की महत्वपूर्ण विशेषता एवं मुख्य उद्देश है, उपन्यास के मर्मस्पर्शी कथानक एवं नारी के अंतर्मन की पीडा की अभिव्यक्ति करने तथा शिप्ल और भाषा के बेजोड निखार के कारम प्रो . गोपाल राय अल्मा कबूतरी उपन्यास को मैत्रेयी पुष्पा जी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास मानते है,

संदर्भ सूची ः

1 . नयी सदी के उपन्यास सं . डॉ . नवीनचंद्र लोहनी़ भावना प्रकाशऩ दिल्ली़ प्रथम संस्करण 2004 पृष्ठ 184,

आधार ग्रंथ ः

1 . अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा ह्यउपन्यासह

2 . आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र डॉ . प्रदीप आगलावे़ श्री . साईनाथ प्रकाशऩ नागपूऱ तृतीया आवृत्ती 2010 .

3 . दसवें दशक के हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक सौहार्द़ प्रो . मंजुला राणा़ वाणी प्रकाशऩ नई दिल्ली़ प्रथम संस्करण़ 2008